Classification of Economies

and

Spatial Organization

अर्थव्यवस्था

- किसी एक विशिष्ट वातावरण में मनुष्य किस प्रकार अपने यंत्रों, विधियों तथा क्रियाकलापों द्वारा वहां के ससांधनों का उपयोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये करते हैं, वह उनकी अर्थव्यवस्था या अर्थतंत्र कहलाता है।
- मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे–भोजन, आवास, वस्त्र आदि के लिए मानव लंबे समय से क्रियाशील रहा है।
- अतः मानव अपने ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी उपलब्धियों और कल्पना शक्ति के बल पर भौतिक परिवेश से समायोजन कर अर्थतंत्रीय भू–दृश्य की रचना करता है।

अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण

- विश्व के सभी प्रदेशों एवं देशों में आर्थिक विकास असमान है क्योंकि विभिन्न भागों में पाई जाने वाली भौतिक दशाएं असमान है। इसलिए भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अर्थव्यवस्थाएं भी भिन्नताएं लिए हुए है।
- वर्तमान विश्व में 3 प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं पाई जाती हैं–
  - विकसित अर्थव्यवस्था–विकसित देशों में
  - विकासशील अर्थव्यवस्था–विकासशील देशों में
  - अविकसित अर्थव्यवस्था–अविकसित देशों में।

विकसित अर्थव्यवस्था
(Developed Economy)

- जिस देश में उच्च तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास के कारण आर्थिक विकास का स्तर बहुत अधिक हो तो ऐसे देश को विकसित अर्थव्यवस्था वाला देश कहा जाता है। (The economy of a country, which has acquired very high stage of development and where per capita income and standard of living is high, is termed as developed economy.)
- यूएसए, रूस, जापान, कनाडा, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी स्पेन, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड, स्विट्जरलैंड आदि विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश हैं।

विकासशील अर्थव्यवस्था
(Developing Economy)

- जो देश विज्ञान एवं तकनीक की दृष्टि से पूर्ण विकसित नहीं हुआ हो लेकिन वो विकास की ओर प्रगतिशील हैं, तो ऐसे देशों की अर्थव्यवस्था को विकासशील अर्थव्यवस्था वाला देश कहा जाता है। यह विकसित एवं अविकसित अर्थव्यवस्थाओं के बीच की अवस्था है। **(The countries of such an economy are neither very advanced nor very backward. Such countries are at present, engaged in making maximum possible use of their resources of raw material, capital and manpower, so as to accomplish rapid economic development.*)***

- भारत, चीन, ब्राजील दक्षिण अफ्रीका आदि विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों के उदाहरण हैं।

अविकसित अर्थव्यवस्था
(Under-developed Economy)

- जिसे देश में विज्ञान एवं तकनीकी विकास नगण्य हो उस देश की अर्थव्यवस्था को अविकसित अर्थव्यवस्था कहा जाता है। **(In an under-developed economy, the level of real income and per capita income is usually very low. Consequently, the standard of living is very low. The reasons for the condition is the lack of scientific and technological application in productive processes and the shortage of capital.)**
- द. एवं मध्य अमेरिका, एशिया तथा अफ्रीका के अधिकांश देश इस प्रकार की अर्थव्यवस्था के उदाहरण हैं।

निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्तमान विश्व में तीन प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं पाई जाती हैं। अर्थव्यवस्था का विकास मुख्यत: वहां के प्राकृतिक संसाधनों एवं मानव संसाधनों पर निर्भर करता है। विश्व के बहुत कम देश विकसित अर्थव्यवस्था वाले है जबकि अधिकांश देश आज भी अविकसित अर्थव्यवस्था वाले हैं। विकसित देशों को विकासशील एवं अविकसित देशों की आर्थिक एवं तकनीकी सहायता कर उनके विकास में योगदान देना चाहिए।

स्थानिक संगठन (Spatial Organization)

- पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों की आपस में तुलना करने पर उनमें कई समानताएं एवं असमानताएं दृष्टिगोचर होती हैं क्योंकि उन प्रदेशों में पाई जाने वाली भौगोलिक दशाएं जैसे–भूआकृति, जलवायु, वर्षा, तापमान, मिट्‌टी, खनिज, प्राकृतिक वनस्पति, जीव–जंतु आदि में भिन्नताएं पाई जाती है।

- इन्हीं भिन्नताओं के कारण वहां की सांस्कृतिक दशाओं में भी भिन्नता आ जाती है जैसे–कृषि, उद्योग, अधिवास, व्यापार, जनसंख्या, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज आदि।

- इन सभी तत्वों से मिलकर किसी स्थान का भूदृश्य तैयार होता है। यह भूदृश्य अकस्मात तैयार नहीं होता है बल्कि मानव और प्राकृतिक वातावरण के बीच सदियों से चली आ रही क्रिया–प्रतिक्रिया का परिणाम होता है।

स्थानिक संगठन के तत्व

पीटर हैगेट ने अपनी एक अन्य पुस्तक **Locational Analysis in Human Geography, 1977** में स्थानिक संगठन के निम्नलिखित 6 तत्व बताएं–

- अन्तःक्रिया (Interaction)
- सकेन्द्र (Nodes)
- धरातल (Surface)
- जाल (Network)
- पदानुक्रम (Hierarchy)
- विसरण (Diffusion)

निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि स्थानिक संगठन संकल्पना भूगोल की एक महत्वपूर्ण संकल्पना है। मानव एवं उसके भौतिक पर्यावरण के बीच की अर्न्तक्रियाओं द्वारा विकसित व्यवस्था को समझने के लिए यह एक महत्वपूर्ण संकल्पना है। साथ ही इससे यह भी पता चलता है कि प्रकृति की किस प्रकार मानव को एवं मानव प्रकृति को प्रभावित करता है।